संपादकीय

भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन संबंधी उद्देश्यों के अनुपालन हेतु राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की द्वारा वार्षिक गृह पत्रिका "प्रवाहिनी" का हिंदी दिवस के अवसर पर प्रकाशन किया जाता है। पत्रिका का तीसवां अंक सुधी पाठकों को सौंपते हुए हमें अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है।

जैसा कि सर्वविदित है कि सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने में हिंदी पत्रिकाएं महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती हैं। इससे हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए अनुकूल वातावरण तो होता ही है साथ ही कर्मचारियों के मन में हिंदी में काम करने के प्रति नवीन चेतना उत्पन्न होती है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर हमारी इस पत्रिका का विगत 30 वर्षों से निरंतर प्रकाशन किया जा रहा है।

हमें आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि विगत अंकों की भांति यह अंक भी प्रबुद्ध पाठकों को रोचक एवं ज्ञानवर्धक लगेगा तथा यह राजभाषा कार्यान्वयन तथा प्रचार–प्रसार में सहायक सिद्ध होगा।

प्रस्तुत अंक में जिन विद्वत रचनाकारों के महत्वपूर्ण, रोचक एवं ज्ञानवर्धक लेखों को सम्मिलित किया गया है, उनका हम सहृदय आभार व्यक्त करते हैं तथा शुभकामनाएं समर्पित करते हैं जिनके समर्थन एवं सहयोग से इस पत्रिका का प्रकाशन संभव हो सका है। प्रयास किया गया है कि इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों की भाषा सरल तथा सुबोध रखी जाए ताकि हर वर्ग का पाठक इन रचनाओं से लाभान्वित हो सके।

हमारा मानना है कि आपकी बहुमूल्य प्रतिक्रियाएं और सुझाव इस पत्रिका को और भी बेहतर बनाने की दिशा में सहायक सिद्ध होंगे, अतः आपके बहुमूल्य सुझावों का स्वागत है।

(संपादक मंडल)